श्री
साईं
चालीसा

श्री साईं चालिसा

पहले साईं के चरणों मे, अपना शीश नमाऊँ मैं ॥ कैसे शिर्डी सांई आए, सारा हाल सुनाऊँ मैं ॥ १ ॥ कौन हैं माता, पिता कौन हैं; यह न किसी ने भी जाना । कहाँ जनम साई ने धारा, प्रश्न पहेली रहा बना ॥२॥ कोई कहे अयोध्या के, ये रामचन्द्र भगवान हैं । कोई कहता साईबाबा, पवन-पुत्र हनुमान हैं ॥३॥ कोई कहता मंगल मूर्ति,

श्री गजानन हैं साईं । कोईं कहता गोकुल-मोहन देवकी नन्दन हैं साईं ॥ ४ ॥ शंकर समझ भक्त कई तो, बाबा को भजते रहते । कोईं कह अवतार दत्त का, पूजा साईं की करते ॥५॥ कुछ भी मानो उनको तुम, पर साईं हैं सच्चे भगवान । बडे दयालू, दीनबंधु; कितनो को दिया जीवन दान ॥ ६ ॥ कई बरष पहले की घटना, तुम्हें सुनाऊँगा मैं बात । किसी भाग्यशाली की, शिर्डी मे आई थी बारात ॥ ७ ॥ आया साथ उसी के था. बाल

एक बहुत सुन्दर । आया, आकर वही बस गया, पावन शिर्डी किया नगर ॥ ८ ॥ कई दिनों तक रहा भटकता, भिक्षा माँगी उसने दर-दर । और दिखाई ऐसी लीला, जग मे जो हो गई अमर ॥९॥ जैसे-जैसे उमर बढ़ी, बढती ही वैसे, गई शान । घर-घर होने लगा नगर में, साईबाबा का गुण गान ॥ १० ॥ दिग् दिगन्त मे लगा गूँजने, फिर तो साईजीका नाम । दीन-दुखी की रक्षा करना, यही रहा बाबा का काम ॥ ११ ॥

बाबा के चरणों मे जाकर, जो कहता मैं हूँ निर्धन। दया उसी पर होती उनकी, खुलजाते दुःख के बन्धन ॥ १२ ॥ कभी किसी ने माँगी भिक्षा, दो बाबा मुझको सन्तान । एवं अस्तु तब कहकर साई, देते थे उसको वरदान ॥ १३ ॥ स्वयं दुःखी बाबा हो जाते, दीन–दुखीजन का लख हाल । अन्तःकरन श्री साई का, सागर

जैसा रहा विशाल ॥ १४ ॥ भक्त एक मद्रासी आया, घरका बहत बडा धनवान । माल खजाना बेहद

उसका, केवल नहीं रही सन्तान ॥ १५ ॥ लगा मनाने साई नाथ को, बाबा मुझपर दया करो। झंझा से झंकृत नैया को, तुमहीं मेरी पार करो ॥ १६ ॥ कुलदीपक के विना अंधेरा, छाया हुआ है घर मे मेरे। इसी लिए आया हूँ बाबा, हो कर शरणांगत तोरे ॥ १७ ॥ कुलदीपक के रे अभाव मे, व्यर्थ है दौलत की माया। आज भिखारी बन कर बाबा, शरण तुम्हारी मैं आया ॥ १८ ॥ दे दो मुझको पुत्र दान, मैं ऋणी रहूँगा

जीवन भर। और किसी की आश न मुझको, सिर्फ भरोसा है तुमपर ॥ १९ ॥ अनुनय-विनय बहुत की उसने, चरणो मे धर-कर के शीश। तब प्रसन्न हो कर बाबा ने, दिया भक्त को यह आशीष ॥ २० ॥ 'अल्ला भला करेगा तेरा,' पुत्र जन्म हो तेरे घर। कृपा रहेगी तुमपर उसकी, और तेरे उस बालक पर ॥ २१ ॥ अब तक नहीं किसी ने पाया, साई की कृपा का पार। पुत्र रत्न दे मद्रासी को, धन्य किया उसका संसार ॥२२॥

तन-मन से जो भजे उसी को, जगमें होती है उद्धार । साँच को आँच नहीं है कोई, सदा झूट की होती हार ॥ २३ ॥ मै हूँ सदा सहारे उसके, सदा रहूँगा उसका दास। साईं जैसा प्रभु मिला है, इतनी ही कम है क्या आस ॥ २४ ॥ मेरा भी दिन था इक ऐसा, मिलती नही मुझे भी रोटी। तनपर कपडा दूर रहा था, शेष नही नन्हींसी लंगोटी ॥ २५ ॥ सरीता सन्मुख होने पर भी, मैं प्यासा का प्यासा था । दुर्दिन मेरा मेरे ऊपर,

दावाग्नी बरसाता था ॥२६॥ धरती के अतिरिक्त जगत मे, मेरा कुछ अवलम्ब न था । बना भिखारी मै दुनियाँ में, दर-दर ठोकर खाता था ॥ २७ ॥ ऐसे में इक मित्र मिला जो, परम भक्त साई का था । जंजालो से मुक्त, मगर इस; जगती में वह भी मुझ सा था ॥ २८ ॥ बाबा के दर्शन के खातिर, मिल दोनो ने किया विचार । साई जैसे दया मूर्ति के, दर्शन को हो गए तयार ॥२९॥ पावन शिर्डी नगरीमे जाकर, देखा मतवाली

मूरति। धन्य जनम हो गया कि हमने, जब देखी साई की सूरति ॥३०॥ जबसे किए हैं दर्शन हमने, दुःख सारा काफ़ूर हो गया। संकट सारे मिटे और, विपदाओंका हो अन्त गया ॥ ३१ ॥ मान और सन्मान मिला, भिक्षा मे हमको बाबा से। प्रतिबिम्बित हो उठे जगतमे, हम साई की आभासे ॥३२॥ बाबा ने सम्मान दिया है, मान दिया इस जीवन मे। इसका ही सम्बल ले मैं, हंसता जाऊँगा जीवन मे ॥ ३३॥ साई की लीला

का मेरे, मन पर ऐसा असर हुआ । लगता, जगती के कण-कण मे; जैसे हो वह भरा हुआ ॥३४॥ "काशीराम" बाबा का भक्त, इस शिर्डी मे रहता था । मैं साई का, साई मेरा; वह दुनियाँ से कहता था ॥ ३५ ॥ सीकर स्वयं वस्त्र बेंचता, ग्राम-नगर बाजारों में । झन्कृति उसकी हृद तन्त्री थी, साई की झन्कारों से ॥ ३६ ॥ स्तब्ध निशा थी, थे सोये, रजनी अंचल मे चाँद सितारे । नहीं सूझता रहा हाथ का, हाथ तिमिरि के मारे

॥ ३७ ॥ वस्त्र बेचकर लौट रहा था, हाय ! हाठ से "काशी" । विचित्र बड़ा संयोग कि उस दिन, आता था वह एकाकी ॥ ३८ ॥ घेर राह मे खड़े हो गए; उसे कुटिल, अन्यायी । मारो काटो लूटो इसको, ही ध्वनी पडी सुनाई ॥ ३९ ॥ लूट पीट कर उसे वहाँ से, कुटिल गये चम्पत हो । आघातो से मर्माहत हो, उसने दी थी संज्ञा खो ॥ ४० ॥ बहुत देर तक पडा रहा वह, वहीं उसी हालत मे । जाने कब कुछ होश हो उठा, उसको किसी [illegible] से ॥ ४१ ॥

अनजाने ही उसके मुँह से, निकल पड़ा था साई। जिसकी प्रतिध्वनि शिर्डी में, बाबा को पडी सुनाई ॥ ४२ ॥ क्षुब्ध उठा हो मानस उनका, बाबा गए विकल हो। लगता जैसे घटना सारी, घटी उन्हींके सन्मुख, हो ॥ ४३ ॥ उन्मादी से इधर उधर तब, बाबा लगे भटकने। सन्मुख चीजें जो भी आई, उनको लगे पटकने ॥ ४४ ॥ और धधकते अंगारों में, बाबा ने कर डाला। हुए सशंकित सभी वहां, लख ताण्डव मतवाला ॥ ४५ ॥

समझ गए सब लोग कि [illegible]
में। क्षुभित खडे थे सभी वहाँ पर, पडे हुए
विस्मय में ॥ ४६ ॥ उसे बचाने के ही खातिर,
बाबा आज विकल हैं। उसकी ही पीड़ासे
पीडित, उनका अन्तस्तल हैं ॥४७॥ इतने मे ही
विधि ने अपनी, विचित्रता दिखलाई। लख कर
जिसको जनता की, श्रद्धा सरिता लहराई ॥४८॥
लेकर संज्ञाहीन भक्त को, गाडी एक वहाँ आई।
सन्मुख अपने देख भक्त को, साई की आँखे भर

आई ॥ ४९ ॥ शान्त, धीर, गंम्भीर सिन्धु सा, बाबा का अन्तस्तल। आज न जाने क्यो रह-रह कर, हो जाता था चंचल ॥५०॥ आज दया की मूर्ति स्वयं था, बना हुआ उपचारी। और भक्त के लिए आज था, देव बना प्रतिहारी ॥५१॥ आज भक्ति की विषम परीक्षा मे, सफल हुआ था काशी। उसके ही दर्शन के खातिर, थे उमड़े नगर-निवासी ॥ ५२ ॥ जब भी और जहाँ भी कोई, भक्त पडे संकट मे। उसकी

रक्षा करने बाबा, जाते है पलभर मे ॥ ५३ ॥ युग-युग का है सत्य यह, नहीं कोई नई कहानी । आपतग्रस्त भक्त जब होता, जाते खुद अन्तर्यामी ॥ ५४ ॥ भेद-भांव से परे पुजारी, मानवता के थे साईं । जितने प्यारे हिन्दू-मुस्लिम, उतने ही थे सिक्ख ईसाई ॥ ५५ ॥ भेद-भाव मन्दिर-मस्जिद का तोड-फोड बाबाने डाला । राम रहीम सभी उनके थे, कृष्ण करीम अल्लाताला ॥५६॥ घण्टे की प्रतिध्वनि से गूँजा, मस्जिद का कोना कोना ।

मिले परस्पर हिन्दू मुस्लिम, प्यार बढ़ा दिन-दिन दूना ॥५७॥ चमत्कार था कितना सुंदर, परिचय इस काया ने दी । और नीम कड़ुवाहट में भी, मिठास बाबा ने भर दी ॥५८॥ सब को स्नेह दिया साईं ने, सबको सन्तुल प्यार किया । जो कुछ जिसने भी चाहा, बाबा ने उसको वही दिया ॥ ५९ ॥ ऐसे स्नेह शील भाजन का, नाम सदा जो जाप करे । पर्वत जैसा दुःख न क्यों हो

पलभर में वह दूर टरे ॥ ६० ॥ साई जैसा दाता

हमने, अरे नहीं देखा कोई। जिसके केवल
दर्शन से ही, सारी विपदा दूर गई ॥ ६१ ॥
तन में साई, मन में साई, साई-साई भजा करो।
अपने तन की सुधि-बुधि खोकर, सुधि उसकी तुम
कियाकरो ॥ ६२ ॥ जब तू अपनी सुधियाँ
तजकर, बाबा की सुधि किया करेगा। और रात-
दिन बाबा, बाबा, बाबा ही तूं रटा करेगा ॥ ६३ ॥
तो बाबा को अरे ! विवश हो, सुधि तेरी लेनी
ही होगी। तेरी हर इच्छा बाबा को पूरी

ही करनी होगी ॥ ६४ ॥ जंगल जंगल भटक
न पागल, और ढूंढने बाबा को । एक जगह
केवल शिर्डी में, तूं पाये गा बाबा को ॥ ६५ ॥
धन्य जगत में प्राणी है वह, जिसने बाबा को
पाया । दुःख मे सुख मे प्रहर आठ हो, साईं का
ही गुण गाया ॥ ६६ ॥ गिरें संकटो के पर्वत,
चाहे बिजली ही टूट पड़े । साईं का ले नाम

सदा तुम, सन्मुख सब के रहो अड़े ॥ ६७ ॥ इस
बूढे की सुन करामत, तुम हो जावो गे हैरान ।
... जिसको, जाने कितने

दंग रह गए सुन कर [illegible], चतुर सुजान ॥ ६८ ॥ एक बार शिर्डी में साधू, ढोंगी था कोई आया, । भोली-भाली नगर-निवासी, जनता को था भरमाया ॥ ६९ ॥ जडी-बूटियाँ उन्हें दिखा कर, करने लगा वहाँ भाषण । कहने लगा सुनो श्रोता-गण, घर मेरा है वृन्दावन ॥ ७० ॥ औषधि मेरे पास एक है, और अजब इसमें शक्ति । इसके सेवन करने से ही, हो जाती दुःख से मुक्ति

ही करनी होगी ॥ ६४ ॥ जंगल जंगल भटक न पागल, और ढूंढने बाबा को । एक जगह केवल शिर्डी में, तूं पाये गा बाबा को ॥ ६५ ॥ धन्य जगत में प्राणी है वह, जिसने बाबा को पाया । दुःख मे सुख मे प्रहर आठ हो, साईं का ही गुण गाया ॥ ६६ ॥ गिरें संकटो के पर्वत, चाहे बिजली ही टूट पड़े । साई का ले नाम सदा तुम, सन्मुख सब के रहो अड़े ॥ ६७ ॥ इस बूढे की सुन करामत, तुम हो जावो गे हैरान ।

दंग रह गए सुन कर जिसको, ज्ञानी विराग चतुर सुजान ॥ ६८ ॥ एक बार शिर्डी में साधू, ढोंगी था कोई आया, । भोली-भाली नगर-निवासी, जनता को था भरमाया ॥ ६९ ॥ जडी-बूटियाँ उन्हें दिखा कर, करने लगा वहाँ भाषण । कहने लगा सुनो श्रोता-गण, घर मेरा है वृन्दावन ॥ ७० ॥ औषधि मेरे पास एक है, और अजब इसमें शक्ति । इसके सेवन करने से ही, हो जाती दुःख से मुक्ति

॥ ७१ ॥ अगर मुक्त होना चाहो तुम, संकट से बीमारी से। तो है मेरा नम्र निवेदन, हर नर से हर नारीसे ॥ ७२ ॥ लो खरीद तुम इसको इसकी, सेवन विधियाँ है न्यारी । यद्यपि तुच्छ वस्तु है यह, गुण उसके हैं अतिशय भारी ॥ ७३ ॥ जो है संतति हीन यहाँ यदि, मेरी औषधि को खायें। पुत्र-रत्न हो प्राप्त, अरे और व मुँह मागा फल पायें ॥७४॥ औषध मेरी जो न खरीदे, जीवन भर पछतायेगा । मुझ जैसा प्राणी शायद ही,

का मेला है, मौज शोक तूम भी कर लो। गर
इससे मिलता है, सब कुछ, तुम भी इसको
ले लो ॥ ७६ ॥ हैरानी बढती जनता की;
लख इसकी कारस्तानी। प्रमुदित वह भी मन-
ही मन था, लख लोगोंकी नादानी ॥ ७७ ॥
खबर सुनाने बाबा को यह, गया दौड़कर सेवक
एक। सुन कर भृकुटी तनी और, विस्मरण हो
गया सभी-विवेक ॥ ७८ ॥ हुक्म दिया सेवक

कों, सत्वरं पकड़ दुष्ट को लावो । या शिर्डी की सीमा से, कपठी कों दूर भगावो ॥ ७९ ॥ मेरे रहते भोली-भाली, शिर्डी की जनता को । कौन नींच ऐसा जों, साहस करता है छलने को ॥ ८० ॥ पलभर मे ही ऐसे ढोंगी, कपटी नीच लुटेरे को । महानाशके महागर्त मे, पहुँचाँ दूँ जीवन भरको ॥ ८१ ॥ तनिक मिला आभाष मदारी; क्रूर, कुटिल, अन्यायी को । काल नाचता है अब सिर पर, गुस्सा आया साई को ॥ ८२ ॥ पलभर मे सब खेल

बन्द कर, भागा सिरपर रखकर [illegible]
था मन ही मन, भगवान नही है क्या अब खैर
॥ ८३ ॥ सच है साई जैसा दानी, मिल न सकेगा
जगमें । अंश ईश का साईबाबा, उन्हें न
कुछ भी मुश्किल जगमे ॥ ८४ ॥ स्नेह, शील,
सौजन्य आदि का, आभूषण धारण कर ।
वढता इस दुनियाँ मे जो भी, मानव-सेवा के पथ
पर ॥ ८५ ॥ वही जीत लेता है जगती, के जन
जन का अन्तस्तल । उसकी एक उदासी ही जग,

को कर देती है विव्हल ॥ ८६ ॥ जब-जब जग में भार पाप का, बढ बढ हो जाता है। उसे मिटाने के ही खातिर, अवतारी हो आता है ॥८७॥ पाप और अन्याय सभी कुछ, इस जगती का हर के। दूर भगा देता दुनियाँ के दानव को क्षण भर मे ॥ ८८ ॥ स्नेह सुधाकी धार बरसने, लगती है दुनियाँ में। गले परस्पर मिलने लगते, जन-जन है आपस में ॥ ८९ ॥ ऐसे ही अवतारी साईं, मर्त्युलोग मे आकर। समता का यह पाठ पढाया,

सिखाई ॥९०॥ नाम द्वारका

सबको अपना आप मिटाकर
मस्जीद का, रख्खा शिर्डी मे साई ने । दाप, ताप, सन्ताप मिटाया, जो कुछ आया साई ने ॥ ९१ ॥ सदा याद मे मस्त राम की, बैठे रहते थे साई । पहर आठही राम नाम का, भजते रहते थे साई ॥ ९२ ॥ सूखी-रूखी ताजी बासी, चाहे या होवे पकवान । सदा प्यार के भूखे साई के, खातिर थे सभी समान ॥ ९३ ॥ स्नेह और श्रद्धा से अपनी, जन जो कुछ दे

जाते थे । बडे चाव से उस भोजन को, बाबा पावन करते थे ॥ १४ ॥ कभी-कभी मन बहलाने को, बाबा बाग मे जाते थे। प्रमुदित मन में निरख प्रकृति, छटा को वे होते थें ॥ १५ ॥ रंग-विरंगे पुष्प बाग के, मन्द-मन्द हिल डुल करके । बीहड वीराने मन मे भी स्नेह सलिल भर जाते थे ॥१६॥ ऐसी सुमुधुर बेला मे भी, दुःख आपत, विपदा के मारे । अपने मन की व्यथा सुनाने, जन रहते बाबा को घेरे ॥ १७ ॥ सुनकर जिनकी करुण

कथा को, नयन कमल भर आते थे
हर व्यथा, शान्ति; उनके उरमे भर देते थे
॥९८॥ जाने क्या अद्भुत, शक्ती; उस विभूति मे
होती थी। जो धारण करते मस्तक पर, दुःख
सारा हर लेती थी ॥९९॥ धन्य मनुज वे साक्षात
दर्शन, जो बाबा साई के पाये। धन्य कमल कर
उनके जिनसे, चरण-कमल वे परसाये ॥१००॥
काश निर्भय तुमको भी, साक्षात साई मिल
जाता। बर्सोसे उजडा चमन अपना, फिरसे

आज खिल जाता ॥१०१॥ गर पकडता मैं चरण श्रीके, नही छोडता उम्रभर। मना लेता मे जरूर उनको, गर रूटते साई मुझपर ॥ १०२ ॥

—: समाप्त :—

*

• आरती साईबाबाकी •

(चाल : आरती श्रीरामायणजी की)

आरती श्रीसाईगुरुवरकी। परमानन्द सदा सुरवरकी ॥ धृ० ॥ जा की कृपा विपलसुखकारी ॥

दुःख, शोक, संकट, भयहारी ॥ १ ॥ शिरडी में अवतार रचाया ॥ चमत्कारसे तत्त्व दिखाया ॥२॥ कितने भक्त चरणपर आये ॥ वे सुखशांति चिरंतन पाये ॥ ३ ॥ भाव धरै जो मनमें जैसा पावत अनुभव वोही वैसा ॥ ४ ॥ गुरुकी उदी लगावे तनको ॥ समाधान लाभत उस मनको ॥५॥ साई नाम सदा जो गावे ॥ सो फल जगमें शाश्वत पावे ॥ ६ ॥ गुरुवासर करि पूजा-सेवा ॥ उसपर कृपा करत गुरुदेवा ॥ ७ ॥ राम, कृष्ण, हनुमान

रूपमें ॥ दे दर्शन, जानत जो मनमें ॥ ८ ॥ विविध धर्मके सेवक आते ॥ दर्शन इच्छित फल पाते ॥ ९ ॥ जै बोलो साईबाबाकी ॥ जै बोलो अवधूतगुरुकी ॥ १० ॥ 'साईदास' आरतिको गावे ॥ घरमे बासि सुख, मंगल पावे ॥ ११ ॥ समाप्त ॥

पद

साई रहम नजर करना, बच्चोंका पालन करनां ॥ ध्रु० ॥
जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूट जमाना ॥ साई० ॥ १ ॥

मैं अंधा हूं बंदा आपका, मुझको प्रभु दिखलाना ॥ साई० ॥ २ ॥
दास गणूं कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ॥ साई० ॥ ३ ॥

रहम नजर करो अब मोरे साई ॥ तुम बिन नही मुझ मा बापभाई ॥ ध्रु० ॥ मैं अंधा हूं बंदा तुम्हारा ॥ मैं ना जानूं, अल्लाइलाही ॥ १ ॥ खाली जमाना मैंने गमाया ॥ साथी आखरका किया न कोई ॥ २ ॥ अपने मशिदका झाडू गनू है ॥ मालिक हमारे, तुम बाबा साई ॥ ३ ॥

☆

हुक्का, चिलिम

लेनाजी महाराज हुक्का भर लायो ॥
दीनके दयाल साई अरज सुनीयो ॥ध्रु०॥

मनकी चिलीम भरिये तनका गुडाखू ॥
ज्ञान अंगार सिलगायो ॥ १ ॥
निर्गुण दटा सगुणही नेचा ।
प्रेमजल हम भरियो ॥ २ ॥
भाव भगतके तुमही प्यारे ।
आनंद खूब रंग उडायो ॥ ३ ॥

★

प्रकाशक : न्यू स्टैन्डर्ड पब्लिकेशन्स 1313, चन्द्रावल रोड, दिल्ली- 110 00

मुद्रक : सिटीजन प्रिन्टर्स, दिल्ली-११०००७